मधुवन ओम् शान्ति अंक 242 सितम्बर 2012

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(17-08-12)

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात पिता बापदादा के अति लाडले, सदा त्याग तपस्या की प्रतिमूर्ति, हर कर्म और सम्बन्ध में अलौकिकता वा दिव्यता को धारण करने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - मधुबन बेहद घर की रौनक के समाचार तो आप सब सुनते ही रहते हो। इस बार लगातार योग तपस्या भट्ठियां चल रही हैं, सभी ने बड़े उमंग-उत्साह के साथ तपस्या की है। बाबा भी कहते बच्चे संसार का तो त्याग सहज कर दिया, अब अपने पुराने संस्कारों का त्याग हो जाए, उसके लिए चाहिए सच्चे दिल की तपस्या। अभी टीचर्स बहिनों की दो भट्ठियां शान्तिवन में चल रही हैं, कल उन सबसे लण्डन में होते साइंस के साधनों से सम्मुख मिलना हुआ। समय प्रमाण सभी में तीव्र पुरुषार्थ की अच्छी लगन है, यह लगन की अग्नि ही अन्दर के छिपे हुए देह-अभिमान को रियलाइज कर समाप्त करा सकती है। अभी तक कभी हम देह-अभिमान को यूज कर लेते, कभी वह हमें यूज कर लेता। सोल कॉन्सेस होना, अपने को आत्मा समझ बाबा से शक्ति खींचना, इसमें देह-अभिमान ही रूकावट डालता है। अब जरूरत है निरन्तर उस सर्वशक्तिवान के साथ कनेक्शन जोड़ने की। अगर सोलकॉन्सेस स्थिति से कनेक्शन जुटा हुआ है तो स्थिति अचल अडोल बन जाती है। इसके लिए एकान्तप्रिय बनना है, एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाना है। तो बोलो, हमारी निमित्त बनी हुई सखियां, बेहद सेवाधारी भाई, इतना अटेन्शन रख तीव्र पुरुषार्थ की रेस कर रहे हो ना! अब तो दिल यही गीत गाता है कि बाबा मैं तुझ देखता रहूँ, तू मुझे देखता रहे... इससे वायुमण्डल कितना अच्छा बन जाता है। ज्ञान कहता है योग लगाओ, योग कहता है ज्ञान को लाइफ में यूज करो। ज्ञानवान वही है जिसके कर्मों में, सम्बन्धों में अलौकिकता और दिव्यता हो। सच्चाई, प्रेम और नम्रता हो। अन्दर से विश्वास हो कि बाबा आपका कार्य हुआ ही पड़ा है। कराने वाला करा रहा है, सर्व के सहयोग से होना ही है। मैंने कुछ नहीं किया। कर्तापन का भान भी न आये। ऐसे बाप समान निरहंकारी, नम्रचित बन बाबा की पालना का सबूत देना है। कभी याद और सेवा में थकना नहीं है। थकते वो हैं जो आवाज में ज्यादा आते अथवा बॉडीकान्सेस में रहते हैं। हम तो सेवाधारी हैं, सच्चाई और प्रेम में थकावट नहीं होती।

तो बोलो, ऐसे मस्त योगी, मस्त फकीर बन हीरो पार्ट बजा रहे हो ना! अब तो हर एक के पार्ट को साक्षी हो देखना है, सबके साथ मिलनसार होकर रहना है। संकल्प में भी कभी यह न आये कि यह अच्छा है, यह अच्छा नहीं है। हमारी मूड कभी चेंज न हो। सदा सीखने की भावना, स्नेह की भावना, सच्चाई की भावना हो। हम सब एक हैं, एक के हैं, बुद्धि सदा बेहद में रहे, खुश रहें तो चेहरे और चलन से बाबा प्रत्यक्ष हो ही जायेगा। तो ऐसा ही अटेन्शन रख अब अपनी ऊंची स्थिति बनानी ही है।

अच्छा - यह मास तो हमारी मीठी दादी का मास है, सभी ने दादी की बहुत अच्छी पालना ली हुई है, दादी कैसे नम्रचित्त, निर्माणचित्त रह सबको सम्मान देते हुए ऊंचे स्वमान में रही है। बेहद की सेवायें की, कराई हैं जो इतना अच्छा यादगार सबके दिलों में कायम है। सब प्यार से दादी का दिन मनाते बेहद की सेवायें करते हैं, मैं भी 3-4 दिन में मधुबन पहुँच जाऊंगी।

अच्छा - सबको बहुत-बहुत याद....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

संस्कार मिटाने और मिलाने में एवररेडी बनो

1) स्थूल सेवा में तो एवररेडी हो अब मन्सा से भी जो संकल्प धारण करने चाहो उसमें भी सदा एवररेडी बनो। जो सोचो वह उसी समय करो, इसको कहा जाता है एवररेडी। मन्सा से भी एवररेडी, संस्कार परिवर्तन में भी एवररेडी। रुहानी सम्बन्ध और सम्पर्क निभाने में भी एवररेडी। संस्कार मिटाने में वा संस्कार मिलाने में भी एवररेडी बनो।

2) जैसे मिलेट्री को ऑर्डर होता है–स्टॉप तो फौरन स्टॉप हो जाते हैं। स्टॉप कहने के बाद एक पाँव भी आगे नहीं बढ़ा सकते हैं। इसी प्रमाण श्रीमत वा डायरेक्शन मिले और एक सेकेण्ड में उस स्थिति में स्थित हो जायें दूसरा सेकेण्ड भी न लगे – इसको कहा जाता है एवररेडी।

3) तीन ग्रुप आउट होने हैं – नम्बर 1. एवररेडी ग्रुप 2. रेडी ग्रुप 3. लेजी ग्रुप। ऑर्डर हुआ और किया। ऑर्डर मानने में लेजी नहीं। तो नॉलेज रूपी दर्पण में स्वयं ही स्वयं का साक्षात्कार करो कि मैं किस ग्रुप में हूँ?

4) ब्राह्मण अर्थात् कहना और करना, सोचना और बोलना, सुनना और स्वरूप में लाना एक समान हो। ऐसे पक्के ब्राह्मण हो ना! एक सेकेण्ड में जहाँ चाहो उस स्थिति में अपने को स्थित कर सकते हो? अशरीरी बनने का अभ्यास इतना ही सरल अनुभव होता है जैसे शरीर में आना अति सहज और स्वत: लगता है। यह अभ्यास ही एवररेडी बनायेगा।

5) रुहानी मिलेट्री हर समय सेकेण्ड में ऑर्डर को प्रैक्टिकल में लाने वाले हो ना!। अभी-अभी ऑर्डर हो अशरीरी भव! तो एवररेडी हो या रेडी होना पड़ेगा? अगर मिलेट्री रेडी होने में समय लगावे तो विजय होगी? ऐसे सदा एवररेडी रहने का अभ्यास करो।

6) ब्रह्मा सहित सब ब्राह्मणों का भी जब एक साथ यह संकल्प उठे कि अब हम सब एवररेडी हैं और नई दुनिया की स्थापना होनी ही चाहिए या होगी ही – ऐसा दृढ संकल्प जब ब्राह्मणों के अन्दर उत्पन्न हो तब ही सृष्टि का परिवर्तन हो अर्थात् नई सृष्टि की रचना प्रैक्टिकल में दिखाई दे।

7) अपनी महीन रूप से चैकिंग करो कि अभी कोई भी ऑर्डर हो तो एवररेडी हैं? सर्विस से भी लगाव न हो, जब सबसे उपराम होंगे तब बेहद की वैराग्य वृत्ति कहेंगे। अपने शरीर से भी उपराम। जैसेकि निमित्त सेवा-अर्थ चलाते हैं। **अब ऐसे एवररेडी बन जाओ जो कोई भी छोटी वा बड़ी** परीक्षा में अचल रहो।

8) बापदादा कहे एक सेकेण्ड में मास्टर शक्ति का सागर बन विश्व को शक्ति का महादान दो तो एक सेकेण्ड में इस स्टेज पर स्थित हो देने वाले दाता का कार्य कर सकते हो? डायरेक्शन मिलते ही मास्टर सर्वशक्तिवान बन विश्व को शक्तियों का दान दे सकते हो? ऐसे एवररेडी हो?

9) जब आत्माओं को कहते हो कि कल नहीं लेकिन आज, आज नहीं अब करो, ऐसे पहले स्वयं से बात करो - ऐसे एवररेडी हैं? सदा यह स्मृति रहती है कि अब नहीं तो कब नहीं। ऐसे स्वयं से रूहरिहान करो।

10) विनाशकारी ग्रुप अब भी एवररेडी है। सिर्फ ऑर्डर की देरी है। **ऐसे स्थापना के निमित्त बने हुए ग्रुप एवररेडी हो?** क्योंकि स्थापना का कार्य सम्पन्न होना अर्थात् विनाशकारियों को ऑर्डर मिलना है। जैसे समय समीप अर्थात् पूरा होने पर सुई आती है तो घण्टे स्वत: ही बजते हैं, ऐसे बेहद की घड़ी में स्थापना की सम्पन्नता अर्थात् समय पर सुई (काँटा) का आना और विनाश के घण्टे बजना। तो बताओ सम्पन्नता में एवररेडी हो?

11) किसी घड़ी भी विनाश ज्वाला प्रज्वलित हो जाए उसके पहले एवररेडी हो? उस समय तो तैयारी नहीं करने लगेंगे?

यह तो नहीं सोचेंगे कि अभी सम्पन्न नहीं बने हैं, प्रजा नहीं बनाई है! पहले से ही सब में सम्पन्न होना है। प्रकृति भी आपका इन्तज़ार कर रही है, दासी बन सेवा करने के लिए इसलिए सदा मालिकपन की स्टेज पर रहो।

12) समय की गति विकराल रूप लेने वाली है। ऐसे समय के लिए एवररेडी हो? या डेट बतायेंगे तब तैयार होंगे। डेट का मालूम होने से सोल कॉन्सेस के बजाए डेट कॉन्सेस हो जायेंगे। फिर फुल पास हो नहीं सकेंगे इसलिए डेट बताई नहीं जायेगी लेकिन डेट स्वयं ही आप सबको टच होगी। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे इन आँखों के आगे कोई दृश्य देखते हो तो कितना स्पष्ट दिखाई देता है। ऐसे इनएडवान्स भविष्य स्पष्ट रूप में अनुभव करेंगे।

13) जैसे विनाश का बटन दबाने की देरी है, सेकेण्ड की बाज़ी पर बात बनी हुई है, ऐसे स्थापना के निमित्त बने हुए बच्चे एक सेकेण्ड में तैयार हो जाएँ, ऐसा स्मृति का समर्थ बटन तैयार है? जो संकल्प किया और अशरीरी हुए। संकल्प किया और सर्व के विश्व-कल्याणकारी ऊंची स्टेज पर स्थित हो गए और उसी स्टेज पर स्थित हो साक्षी दृष्टा हो विनाश लीला देख सकें।

14) एवररेडी माना ऑर्डर आया और चल पड़े अर्थात् ऑर्डर मिला और हाँ जी। क्या करें, कैसे करें, नहीं। क्या होगा, कैसे होगा, चल सकेंगे या नहीं चल सकेंगे, ऐसा संकल्प आया तो एवररेडी नहीं कहा जायेगा। तीव्र पुरूषार्थी की विशेषता है ही एवररेडी और ऑलराउण्डर। मन्सा सेवा का चान्स मिले या वाचा सेवा का चान्स मिले या कर्मणा सेवा का चान्स मिले लेकिन हर सबजेक्ट में नम्बरवन।

15) यह पुराना चोला टाइट तो नहीं है? टाइट ड्रेस तो पसन्द नहीं करते हो ना! ड्रेस टाइट होगी तो एवररेडी नहीं होंगे। बन्धन मुक्त अर्थात् लूज़ ड्रेस, टाइट नहीं। आर्डर मिला और सेकेण्ड में गया। ऐसे बन्धन-मुक्त योगयुक्त बने हो? जब वायदा ही है 'एक बाप दूसरा न कोई' तो बन्धनमुक्त हो गये ना।

16) साथ रहने वाले, साथ देने वाले और फिर है लास्ट में साथ चलने वाले। तीनों में एवररेडी। साथ रहना और देना अभी है, चलना पीछे है। जब दोनों ही बातें ठीक हो जायेंगी तो तीसरे की डेट भी आ जायेगी।

शिवबाबा याद है? 30-08-11 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

''अपना मित्र बनकर, मन को बाबा का मित्र बना दो तो न दुःख लेंगे, न दुःख देंगे''

(दादी जानकी)

तीन बार ओम् शान्ति करते हैं। एक मैं आत्मा हूँ तो शान्त हो जाते हैं, फिर मेरा बाबा तो शक्ति आ जाती है और ड्रामा बड़ा धीरज दिलाकर हर्षित रहना सिखाता है। आत्मा परमात्मा से कनेक्शन रख शक्ति ले लेती है। अपने को आत्मा समझने में अच्छा लगता है। बाबा की शक्ति से अपने को आत्मा समझना, इससे देह-अभिमान छूट जाता है।

बाबा की रोज़ की मुरली कितना सुख देने वाली है। बाबा कहते बच्चे कुछ भी हो जाए तुम दु:ख नहीं लेना, दु:ख नहीं देना। पहले दु:ख होता है मन में फिर वाणी और कर्म में आता है इसलिए मन को इतना प्यारा मीठा बना दो, अपना मित्र बनाके, बाबा का मित्र बना दो। गीता में भी कहा है आत्मा अपना ही मित्र, अपना ही शत्रु है। अगर दु:ख फील करेंगे तो दु:ख देंगे भी। बाबा कहते तुम मेरे ज्ञानी तू आत्मा समझदार बच्चे न दु:ख दो, न दु:ख लो। यह तुम्हारा काम नहीं है।

अपना चार्ट रोज़ देखना, चार्ट खराब हो तो चेक करके

उसे फौरन ठीक कर देना। सेकेण्ड में दिल से कहा बाबा, चार्ट ठीक हो गया। कोई भी सीन सामने आई होगी, बाबा कहेगा ड्रामा, सीन पास हो गई। मुरझायेंगे नहीं। क्यों, क्या करने से दु:ख फील होता है। दु:ख देने वाले क्यों, क्या करते हैं।

दादी के निमित्त इतना अच्छा संगठन हुआ है, यह भूल नहीं सकता। जो अच्छी-अच्छी बातें मिली हैं वह सब हमारी लाइफ के अन्दर आ जाएं। बाबा ने हम बच्चों के लिए यज्ञ रचा, इस यज्ञ से जो पालना मिली है, उससे पावन बन रहे हैं। कोई भी आत्मा पवित्र बनने के बिना वापस घर में नहीं जा सकती। याद में रहने के लिए चक्र का ज्ञान भी बहुत मदद करता है। संगमयुग बड़ा सुहावना है, तन-मन से, वृत्ति-दृष्टि से, रहम, सच्चाई, प्रेम के अवतार बन गये हैं। रहम, सच्चाई के बिगर प्रेम काम नहीं कर सकता है। तो अपना मित्र बनने के लिए, बाबा को सामने रख करके, सच्चाई, रहम और प्रेम सम्पन्न बनते हैं। जैसे दादी ने बाबा को कदम कदम पर पूरा फॉलो किया है। बाबा ने हाथ में हाथ दिया है, वह हाथ और साथ का अनुभव हम सब भी करते रहें। दादी दीदी ने तो किया, मुझे क्या करना है! मेरे को बाबा ने डायरेक्ट कहा था किसी को दु:ख नहीं देना। मेहरबानी है, मेरे बाबा की मेरे ऊपर। ऐसा अच्छा चार्ट रखने के लिए ऐसी शिक्षा दी जो कुछ भी हो जाए दु:ख देना, लेना नहीं। चार्ट खराब हो जायेगा। प्युरिटी में तो सब पक्के हो गये हैं पर पीसफुल, लवफुल बनें तो सबूत है। प्युरिटी का प्रैक्टिकल प्रूफ है जीवन सुख शान्ति सम्पन्न बन जाए। बाबा ज्ञान का, शान्ति का सागर है, हम ब्रह्मा मुख वंशावली होने से यज्ञ की पालना मिलने से पावन बन गये हैं। पहले पवित्र बने फिर पावन बन गये हैं।

तो बाबा कहता है परमात्मा बाप पतित-पावन है, हम बच्चों को पतित-पावनी गंगा बना दिया है। संगम गंगा जमुना का है, सरस्वती गुप्त है। वहाँ भी मेला लगता है, यह कितना सुन्दर मिलन मेला है, इसे देख बहुत खुशी होती है। खुश रहने में भी शक्ति मिलती है। अन्दर ही अन्दर अपने को खुश रखना, ऐसा संकल्प, वाणी, कर्म हो जो सदा खुश रहने की शक्ति अपने आप काम करे।

बाबा की शिक्षाओं से खुश रहने की शक्ति जमा करना, मेरा बाबा हमारे से खुश। बाबा सदा ही शान्तिधाम में रहता है। भक्ति में भक्तों की भावना पूरी करता है। बाबा हमको देख खुश होवे उसके लिए क्या करें? हमारे कर्म ऐसे हो जो बाबा को खुशी हो। बाबा अव्यक्त रूप से सेवा कर रहा है, पालना कर रहा है, यहाँ जब आता है तो बच्चों को देख बाबा बड़ा खुश होता है। जब हम खुश रहते हैं तो बाबा भी खुश होता है।

मीठी मम्मा ने एक बार शिक्षा दी, जनक सदा ही समझों जहान मुझे देख रहा है। भक्ति में भी संस्कार थे भगवान मुझे देख रहा है। कोई घड़ी नहीं जो बाबा मुझे न देख रहा हो। मैं बाबा को देख रही हूँ, बाबा मुझे देख रहा है, पर अभी तो जहान मुझे देख रहा है...। मात पिता ने पालना देकर, जैसे खुद है वैसे हमारे संस्कार बना दिये हैं। कोई भी कारण से शक्ति कम न हो, ज्ञान से शक्ति अलग है, योग से शक्ति अलग है। ज्ञान योग का जो बल है वह दोनों का इकट्ठा है। ज्ञान योग साथ-साथ है, ज्ञान-योग से संबंध और कर्म में योग है। योग में यह भान है कि सब मेरे बहन भाई हैं। बाबा का इतना बेहद परिवार है, जैसी हमारी वृत्ति होगी वैसी दृष्टि होगी, वैसी सृष्टि दिखाई देगी।

इतना सबने खजाना लिया है तो खजाने की चाबी भी सम्भालके रखना। साक्षी होकर देखेंगे तो सभी में गुण बहुत हैं। लेकिन हमने थोड़ा किसका अवगुण देखा, तो वह अवगुण मेरा हो जायेगा। गुण अनेक हैं, किसका अवगुण देखा तो वृत्ति दृष्टि बदल गई। सदा स्मृति में रहना है तो वृत्ति दृष्टि की सम्भाल करनी है। करोड़ों, लाखों में कोई होवनहार सतयुगी राजाओं के राजा बनने वाले हैं, ऐसी भावना से दृष्टि वृत्ति सदा सुखदाई हो। बाबा का वरदान लेकर अपने को वरदानी मूर्त बना दो। बाबा का वरदान, स्लोगन बुद्धि में वृत्ति में रखो तो मूर्ति बन सकते हो। अच्छा।

3-9-11

''दिल को सच्चा और साफ रखो तो दिलाराम बाबा खुश हो जायेगा''

(दादी जानकी)

हम सब आपस में जब एक साथ संगठन में मिलते हैं तो कितने फायदे होते हैं! एक तो यहाँ नियम बन जाता है, जैसे अमृतवेले खैंच होती है, भले व्यक्तिगत रूप से हरेक अपना करते होंगे लेकिन यहाँ सबके बीच में बैठकर करेंगे तो बाबा पूरे संगठन को दृष्टि देगा। आज की इतनी सारी रचना को इकट्ठा बाबा और हमारे पूर्वज देख कितना खुश होते होंगे। तो आज अमृतवेले आँख खुलते ही बाबा की बात बहुत जोर से याद आ रही थी कि संसार में अति अधर्म हो गया है, उसका नाश करना है। उसके पहले सत् धर्म की स्थापना के लिए इतना अच्छा पॉवरफुल एटमॉसफियर हो जिससे अधर्म का नाश हो जाये। याद से हमारे तो विकर्म विनाश हो जायें परन्तु सारी दुनिया से भी अधर्म का, विकर्मों का, पापों का नाश हो जाये। भले देवता धर्म में आवे न आवे, भले अपने धर्म में जायें पर मुक्ति जीवनमुक्ति दाता बाबा के द्वारा सभी सत्यता का अनुभव करके जायें। यहाँ शान्ति के सागर बाबा से शान्ति की अनुभूति करके शान्ति लेके जायेंगे तो शान्तिधाम में शान्त रह सकेंगे ना।

पहले हमारी बुद्धि में बाबा की याद समाई हुई हो फिर कोई न कोई के साथ अच्छी रूहरूहान करके किसी नये को भी पकड़के बाबा की बात कुछ-न-कुछ अच्छी तरह से सुनाओ तो इससे किसी की कैसी भी मूड हो वो ठीक हो जाती है और कल्याण भी हो जाता है। बाबा की बहुत अच्छी अच्छी बातें हैं, उन बातों को छोड़ और बातें अपनी बना करके, पता नहीं क्या-क्या बातें अन्दर से करते रहते हैं। अभी उसमें टाइम वेस्ट नहीं करो। दिल हमारी है तो उस दिल को सच्चा साफ रखो तो बाबा खुश हो जायेगा। अगर दिल में कोई और बात रखेंगे तो न मैं खुश, न मेरे साथ रहने वाले खुश, न बाबा खुश। अपने को सदा खुश सन्तुष्ट रखना, आनन्दमय स्थिति में रहना। मैंने परमानंद को पाया, यह वही कहेगा जो लव में लीन होगा। चित्त में सच्चाई आ जाने से आनन्द स्वरूप बनेंगे। परमात्मा सच्चिदानंद स्वरूप हैं पर हम आत्मा भी ऐसे कैसे बनेंगी! अपने कर्मों को ठीक करने से ऐसे बन सके हैं। अगर हमारा मन, वाणी, कर्म अच्छा हो गया तो ऑटोमेटिक कर्म ऐसे होंगे जो अपने लिये तो बहुत फायदे हैं लेकिन सबके लिये फायदा ही फायदा है।

हमारा मन कभी मूँझे नहीं, सदा मौज में रहे उसके लिये क्या किया जाये? अगर किसी को मूँझने और घबराने की आदत है तो उनकी बुद्धि कैसी होगी, उनकी दिल कैसी होगी, वो विवेक कैसा होगा? ऐसों की लाइफ कैसी होगी? मन द्वारा ही कभी काम की, कभी क्रोध की, कभी लोभ, मोह की माया आती है। मेरे दिल मन में क्या है वो आँखें बतायेंगी, तो लज्जा नहीं आयेगी? यह आँखें ऐसी हैं जो दिल और मन की बातें दृष्टि द्वारा मुख से वर्णन करके बताने से पहले ही दिखाई देता है। जो बाबा की दृष्टि लेने के आदती हैं माना बाबा के दृष्टि बिगर नहीं चल सकते हैं, ऐसे मन को ऑर्डर में रखने से मायाजीते जगतजीत बनेंगे। जिसके दिल में बाबा की बात लग जाती है, जो उसे दिल में समा लेते हैं उनका ही यादगार यह दिलवाला मन्दिर है। तो हम अभी सब चैतन्य दिलवाला मन्दिर में बैठे हैं, यह भान आ रहा है! जो ऐसे दिलवाले के दिल (मन्दिर) में सदा ही समाये रहते हैं उनकी दिल कैसी होगी! उनसे सारे विश्व को मधुबन से सकाश मिलती है, प्यार का अनुभव होता है। आजकल सब प्यार के प्यासे भूखें हैं क्योंकि सभी से धोखा खाके थक चुके हैं। तो हमारा प्यार बाबा से हो जाये तो हमारे सदके सबका प्यार बाबा से हो जायेगा इसलिये बाबा कहते हैं तुम्हारी ऐसी सच्ची दिल हो जो तेरे संग में रहे, उसको भी रंग लग

जाये, उनकी भी दिल बाबा से लग जाये।

मेरे को विदेश में किसी ने पूछा कि आपकी किसी से दिल लगी हुई है? तो मैंने कहा हाँ, मेरे दिलवर का नाम है दिलाराम, बच्चे हैं सुख-शान्ति। बेटा है सुख, बेटी है शान्ति। वो यह सुनके बहुत खुश हो गया क्योंकि मैंने कहा छोटा परिवार सुखी परिवार है, कोई प्रॉबलम वा कम्पलेन्ट नहीं है। ऐसे अपने आपसे बातें करके अपने आपको बहलाओ ना, रूखे सूखे क्यों बनते हो? सेवा हुई है, हो रही है बाबा कर रहा है, करा रहा है लेकिन हम अन्दर से कोई बात का फिकर नहीं करें।

मधुबन में कैसे अनुभव करना चाहिए वो प्रैक्टिकली संगठन में, सेवा में ऐसा अनुभव हो, जो न तू, न मैं, न तेरा न मेरा, न हूँ हाँ, न भाव स्वभाव... बस, ऐसी अगर अवस्था हो तो और क्या चाहिए। सारे दिन में अगर यह भी नही करो तो क्या किया? फिर फैमिली फीलिंग नहीं आती है। अच्छा।

14-4-12

''मुरली के चारों ही सब्जेक्ट पर पूरा अटेन्शन देने वाले व्यर्थ से मुक्त रह फर्स्ट नम्बर में आते हैं'' (दादी गुल्जार)

फर्स्ट नम्बर में जो आने वाले हैं उन्हों के लिये बाबा यही सुनाता है, जैसे हमारी मम्मा ने किया है, रोज़ की मुरली बाबा हमारे लिये चलाते हैं। और उस मुरली में चार ही सबजेक्ट होते हैं, तो मुरली में चार ही सबजेक्ट के लिये बाबा जो इशारा देता है उसी रीति से हम अपनी दिनचर्या सेट करें, जो बाबा ने कहा है वो हमको करना है क्योंकि व्यर्थ संकल्प वा कमजोर संकल्प के मन में ही तूफान आते हैं। अगर हमारा मुरली पर अटेन्शन है तो मुरली के चार ही सबजेक्ट के लिए जो बाबा ने कहा है वो करने से, मन को उसमें बिजी रखने से वेस्ट थॉट्स नहीं आते हैं और बाबा से मिलन भी मनाते रहते हैं। बाबा की शक्ति मिलती रहती है। आज्ञाकारी बन श्रीमत पर चलने से बाबा की दुआयें मिलती हैं। बाबा ने जो कहा है उसमें एक भी प्वाइन्ट हमारे से मिस न हो, यह है पहला नम्बर।

दूसरा नम्बर - सोचता है, आज की मुरली बहुत अच्छी थी, आज बाबा ने चारों ओर के डायरेक्शन बहुत अच्छे दिये हैं लेकिन कोई-न-कोई बात सामने आती है, चाहे अपने संस्कार की चाहे दूसरों के संस्कार की, क्योंकि हम सभी संगठन में रहते हैं, अकेले नहीं रहते हैं तो वो बातें जो आती हैं, उन बातों में टाइम लगाना ही पड़ता है, क्योंकि बातें जो आयी वो हमारे मन से जल्दी नहीं जाती हैं। उनका लिंक जुटा रहता है, बीच-बीच में वो बातें बहुत याद आती हैं, उसको मिटाने में टग ऑफ वार चलता रहता है। बाबा के मुरली की जो शिक्षा है वो भी याद आती रहती है और जो बात आयी है वो भी याद आती रहती है। तो यह दोनों की टग ऑफ वार चलती रहती है। शुद्ध अशुद्ध, व्यर्थ समर्थ इनकी युद्ध चलती रहती है। कभी विजयी होते हैं, कभी हार भी जाते हैं। तो आत्मा में इतनी पॉवर आये जो बाबा ने कहा वो किया, वो पॉवर जो फर्स्ट नम्बर में आती है, सेकेण्ड नम्बर को उसमें टाइम लगाना पड़ता है इसलिये वो पहले नम्बर से कम हो जाते हैं।

और थर्ड नम्बर जो हैं वो तो अपने ही कोई-न-कोई बात की उलझन में पड़े रहते हैं, यह क्यों, यह क्या... इसने यह किया, उसने ऐसा किया.... इसको दादी ने पूछा हमको नहीं पूछा, मतलब क्यों, क्या, कैसे... यह माया के शब्द कै कै, उसमें ही फंसा रहता है इसलिये वो थर्ड नम्बर होने के कारण बाबा की मुरली से या संगठन में एक दो से भी जो सुख मिलना चाहिए वो सुख की प्राप्ति नहीं होती है। क्यों, क्या में ही ज्यादा टाइम वेस्ट हो जाता है। तो हर एक अपने को चेक करे कि मैं कौन सा नम्बर हूँ? ओम् शान्ति।

1-5-12

''मन की ऐसी दिनचर्या बनाओ, उसे इतना बिजी कर दो जो व्यर्थ सोचने की फुर्सत न रहे'' (दादी गुल्जार)

कभी भी कुछ भी बात मन में आये जो योग्य नहीं है उस समय ओम् शान्ति कहने से बात खत्म हो जाये इतना ओम् शान्ति का महामन्त्र पक्का हो गया है? मुरली की कोई भी बात को स्मृति में लायेंगे तो सदा ही हर्षित रहेंगे, सदा ही उड़ते रहेंगे क्योंकि हम सब बाबा के साथ चलने के लिये फरिश्ते बन रहे हैं तो बापदादा ने कहा फरिश्तों के पंख कौन-से है? उमंग और उत्साह यह फरिश्तों के पंख हैं।

मधुबन का अर्थ ही है मधु माना प्यारा मधुर, वन माना वैराग वृत्ति। तो मधुबन वालों में मधुरता भी बहुत अच्छी और वैराग्य भी अच्छा होगा। हमने देखा मधुबन का नाम बहुत अच्छा है और दोनों ही धारणायें जरुरी हैं। तो यह धारणा हम सब मधुबन निवासियों की तो हैं ही और आगे भी बाबा कहते हैं कदम कदम पर अपनी चेकिंग करते रहो, तो मधुरता और बेहद का वैराग्य यह दोनों ही साथ-साथ चलता है या नहीं? क्योंकि हमारा वैराग्य उन्हों जैसा तो नहीं है। कर्म करते भी कर्म के अटैचमेन्ट से वैराग्य। कर्म को नहीं छोड़ना है, हम कर्मयोगी हैं। कर्म करते कर्म से औरों को भी श्रेष्ठ कर्म का उमंग दिलाते हैं। तो यह हम सभी मधुबन निवासियों को स्मृति रहती ही है और रहनी चाहिए।

बाकी तो बापदादा आजकल हमें विशेष मन को बिजी रखने की प्रेरणा दे रहे हैं क्योंकि मन को कुछ न कुछ सोचने, करने की आदत पड़ गयी है, शान्ति में कम रह सकते हैं क्योंकि आदत नहीं है ना। अभी बाबा कहते हैं मन को इतना बिजी रखो जो मन और कुछ फालतू सोच ही नहीं सके, टाइम ही नहीं हो। ऐसे अपने मन की दिनचर्या बनाओ। तो बाबा ने मन्सा सेवा भी कही है, उसको भी हम जानते ही हैं और करते भी होंगे। दूसरा बाबा ने कहा कि सेवा भी करो और अपने मन का ऐसा टाइमटेबल भी खुद ही बनाओ जो फुर्सत ही नहीं हो मन में व्यर्थ कुछ सोचने की। तो अवश्य ही हम सब मधुबन निवासी ऐसी दिनचर्या बनाते होंगे और रात को बाबा को सुना करके शाबाश लेके, वाह बच्चे वाह! की मेहरबानी लेके सो जायें.. तो सभी यह जरूर करते होंगे। और नहीं करते हैं तो और अटेन्शन देके करेंगे। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

धरती पर पांव हैं तो सेवा अर्थ हैं नहीं तो धरती से ऊपर रहो

1) बाबा ने हम बच्चों को ऐसी समझ दी है जो हमें भटकने से छुड़ाती जाती है। मनुष्यों को भक्ति भी बहुत भटकाती है, तो विकार भी भटकाते हैं। विकारों के वशीभूत आत्मा विकारों से छुटकारा पाये - यह बड़ा मुश्किल है। विकारों की कमजोरी परमात्मा बाप का बनने नहीं देती। कमजोरी सत्यानाश कर देती है। विकारों पर विजय पाने के लिए गुप्त योगी बनना पड़े। शो करने वाला नहीं। शो करने वाला कभी भी भागन्ती हो सकता है। ऊपर से कहेंगे बाबा-बाबा लेकिन अन्दर से जो सच्चा प्यार चाहिए, वह नहीं। बाबा के साथ भी बाबा को झूठा प्यार दिखायेंगे। अन्दर होगी ठगी, चोरी.. दूसरे किसी को प्यार करते होंगे जरूर। कोई सम्बन्धियों को प्यार करते होंगे, कोई धन दौलत से करते होंगे.. फिर पार्ट बाबा के साथ ऐसा बजायेंगे, बाबा यह सब तो आपका है। परन्तु एक भी चीज़ को हाथ लगाने नहीं देंगे। अगर तन-मन-धन सब तेरा कहा तो तेरा माना सदा उसकी सेवा में हाज़िर। मन तेरा माना कहाँ भी भटक नहीं सकता। एक बाबा दूसरा न कोई। धन तेरा है माना मेरे पास धन नहीं, जो खिलाओ, जहाँ बिठाओ।

2) हम बाबा के बच्चे बेफिकर बादशाह हैं। फकीर नहीं हैं लेकिन मस्त फकीर हैं। जहाँ पांव रखें वहाँ बाबा की सेवा। नहीं तो हमको जरूरत नहीं है धरती पर पांव रखने की। अब हमारी अवस्था ऐसी हो - धरती पर पांव है तो सेवा अर्थ हैं, नहीं तो ऊपर भी हमारे लिए बहुत सर्विस है। चारों ओर सर्विस है। अगर बाबा सेकण्ड में आ जा सकता है तो हम भी तो बाबा के बच्चे सेकण्ड में आ जा सकते हैं। बाबा पतित तन में आया लेकिन भूमि ऐसी पावन बनाई जहाँ आत्मायें आकर पावन बनें। सेन्टर्स फायर ब्रिग्रेड हैं, जहां आग लगे बचाने के लिए, दुनिया के हर कोने में फायर ब्रिगेड हैं। लेकिन बचकर कहाँ आयेंगे? बाबा का घर देख लिया है। विनाश के समय स्थूल में नहीं पहुँचेंगे तो बुद्धि से तो पहुँच ही जायेंगे। इतना हमारा अभ्यास हो, यहाँ आग लग रही है और हम ऊपर चले जाएं। सेकण्ड में अशरीरी बनने की प्रैक्टिस हो, इसकी रिहर्सल करो। हमारे अन्दर बाबा की इतनी याद हो जो कोई भी आत्मा को हमारा यह शरीर दिखाई न पड़े। इसके लिए गुप्त याद। गुप्त बाबा से अपनी लगन लगाते जाना यह है सच्चा पुरुषार्थ।

3) आज इन्टरनेशनल वर्ल्ड पीस डे है। आज के दिन अपनी जो विधि रहती वा शुभ संकल्प रहता कि आज हम सब ब्राह्मणों का वर्ल्ड पीस डे है, यह भी एक बहुत बड़ी अनायास ही ड्रामा अनुसार जो विधि फिक्स हुई है, इसका भी देश-विदेश में अच्छा ही प्रभाव है। यह भी अच्छा साधन है। विदेशों में इस दिन को बहुत महत्व देते हैं। आज के दिन क्लासेज के भी संगठित रुप में प्रोग्राम चलते, सभी का मिलन भी होता। यह समय करीब-करीब सभी को अनुकूल भी होता है। हम सभी का यही शुभ संकल्प हैं कि हमें विश्व में अपने साइलेन्स के वायब्रेशन चारों तरफ फैलाने है। तो सभी के अन्दर सवेरे से यह संकल्प रहता कि आज हम सारे विश्व में शान्ति की किरणें फैलायें।

4) हम जितना संगठित रूप में मिलकर हर एक कार्य करते हैं उतना पावरफुल वायब्रेशन बनता है। तो हम सब एक साथ मिलकर ऐसा कंगन बांधें जो पीस के साथ-साथ लव और युनिटी का भी वायब्रेशन सबको मिले। जितना हम सभी स्वयं को अन्तर्मुखी बनायेंगे, जितना हम एक दो के प्रति शुभ भावना रखेंगे उतना ही हम एक दो के सहयोगी, साथी रहेंगे। कोई भी कार्य व्यवहार में हम सबका साथ है। अब क्यों, क्या के संकल्पों को समाप्त कर स्वयं, स्वयं को अचल बनाओ।

5) हम बापदादा के लाडले बच्चे हैं, जो अपने को लाडला कहलाता उसके ऊपर बहुत बड़ी जवाबदारी आ जाती है। जो लाडला है उसे इतना रिटर्न बराबर देना होता, इसका भी बहुत बड़ा हिसाब-किताब है। हमारी यह जीवन साधारण जीवन नहीं है, यह सेवा करनी है, चल तो रहे हैं, क्लास में तो जाते हैं, योग तो करते हैं यह सब है साधारण बातें। अब हमारा पुरुषार्थ असाधारण चाहिए। हमारी धारणायें भी असाधारण हैं। हम अपने को कहलाते हैं साक्षात्कार मूर्त, अगर साक्षात्कार कराने समय हमारा मूड खराब हो तो भक्त हमारे से कौन सा साक्षात्कार करेंगे? हमारा यह मूड ही गायन योग्य है। हमारे इस मूड से ही वह मूडमति बन जायेंगे। जो मूडी है वह है मूडमति। हम कहते जो बाबा को नहीं पहचानते हैं वह मूडमति हैं लेकिन हम खुद ही मूडमति है, कब यह सोचा? अगर मनन नहीं चलता तो वह अपने संस्करों की पालना करता रहता, अपने ऊपर फुल अटेन्शन रहे तो अन्तर्मुखता में रह मनन भी चले।

6) हमें अपने कैरेक्टर्स में कभी भी लूज़ नहीं रहना है, कभी बहुत जोश हो, कभी बचपन, कभी हठयोगी बन जायें, कभी खाओ पियो मौज करो – यह बिल्कुल नहीं होना चाहिए। हम सब युद्ध के मैदान में हैं, हमें हर समय अलर्ट रहना है, लूज़ नहीं होना है। हम सब मार्सल्स हैं। 24 घण्टा हमारे पीछे लश्कर है, दुश्मन हमारे मिनट-मिनट को चेक करता रहता। यह दुनिया, यह समाज, यह प्रकृति सब हमारी लश्किर है। सब मुझे सेकण्ड-सेकण्ड देख रहे हैं। हम इस प्रकृति को भी परिवर्तन करने वाले हैं। इतना सर्विस का हमारे ऊपर बन्धन है। तो कितना न हमें अलर्ट रहना चाहिए। होशियार मार्सल कब पजिल नहीं होता।

7) हम सारी दुनिया की चोटी पर बैठे हैं, हमें योग की लाइट से सबको परिवर्तन करना है, सबको परिवर्तन करने के, सबकी बुद्धि को फेरने के हम जवाबदार हैं। पजिल (परीक्षायें) तो मिनट-मिनट में आयेंगी, आती ही रहेंगी लेकिन हमें सब पजिल्स का हल सेकण्ड में देना है। अगर हम ही पूछें तो क्या होगा? तो फिर हम दूसरों को हल क्या देंगे? नफ़रत करनी है अपने संस्कारों से न कि दूसरों से। हमें सर्व की समस्यायें हल करनी हैं न कि समस्या रूप बन जाना है। समस्या रूप बनना माना विघ्न रूप बनना, मैं विघ्न हरता हूँ, करता नहीं। अच्छा। ओम् शान्ति।